गुरु पूर्णिमा निबंध

गुरु पूर्णिमा भारत का एक महत्वपूर्ण पर्व है, जिसे गुरु की महिमा और सम्मान के रूप में मनाया जाता है। यह पर्व आषाढ़ मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। इस दिन का महत्व भारतीय संस्कृति में अत्यधिक है क्योंकि यह गुरु-शिष्य परंपरा का प्रतीक है। गुरु को जीवन में सही मार्गदर्शन देने वाला माना जाता है, और उनकी कृपा से ही शिष्य जीवन में सफलता प्राप्त करता है। इस दिन गुरु और शिष्य के पवित्र संबंध को मान्यता दी जाती है, जो शिक्षा और ज्ञान के प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जैसा कि श्लोक में कहा गया है:

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।

गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

Meaning: The Guru is Brahma (the Creator), the Guru is Vishnu (the Preserver), the Guru is Maheshwara (the Destroyer). The Guru is the Supreme Brahman, salutations to that Guru.

गुरु पूर्णिमा का इतिहास बहुत पुराना है और यह वेदव्यास जी से जुड़ा हुआ है। वेदव्यास जी ने वेदों का संकलन किया था और इसलिए उन्हें आदि गुरु माना जाता है। उनके सम्मान में ही गुरु पूर्णिमा का पर्व मनाया

जाता है। भगवान बुद्ध ने भी इस दिन को अत्यधिक महत्वपूर्ण माना था और कहा जाता है कि उन्होंने अपना प्रथम उपदेश इसी दिन दिया था। जैन धर्म में भी गुरु पूर्णिमा का महत्वपूर्ण स्थान है और इसे "त्रिनोत्री पर्व" के रूप में मनाया जाता है।

गुरु-शिष्य परंपरा में कई प्रसिद्ध जोड़ियाँ हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख हैं: महाभारत में एकलव्य और द्रोणाचार्य की कथा बहुत प्रसिद्ध है। एकलव्य ने बिना गुरु की अनुमति के ही गुरु द्रोणाचार्य की मूर्ति बनाकर उनसे धनुर्विद्या सीखी। श्रीकृष्ण और अर्जुन की जोड़ी भी अत्यधिक प्रसिद्ध है, जहाँ श्रीकृष्ण ने अर्जुन को भगवद गीता का उपदेश दिया था। रामायण में राम और वशिष्ठ की जोड़ी भी महत्वपूर्ण है, वशिष्ठ मुनि ने भगवान राम को ज्ञान और धर्म का मार्ग दिखाया था। चाणक्य और चंद्रगुप्त मौर्य की जोड़ी भी इतिहास में बहुत प्रसिद्ध है, जहाँ चाणक्य ने चंद्रगुप्त को शिक्षा दी और उन्हें मौर्य साम्राज्य का संस्थापक बनाया। इसी परंपरा को संस्कृत श्लोक में इस प्रकार व्यक्त किया गया है:

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।

तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

Meaning: Salutations to the Guru, who has shown me the state which pervades the entire sphere of existence, moving and non-moving.

गुरु पूर्णिमा का समारोह विद्यालयों, आश्रमों और मठों में बहुत धूमधाम से मनाया जाता है। इस दिन विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है, जहाँ विद्यार्थी अपने शिक्षकों को सम्मानित करते हैं। आधुनिक समय में भी गुरु पूर्णिमा का महत्व कम नहीं हुआ है। लोग इस दिन अपने शिक्षकों, मार्गदर्शकों, और सलाहकारों का सम्मान करते हैं। गुरु पूर्णिमा का आध्यात्मिक महत्व भी बहुत अधिक है, जहाँ इस दिन साधना, ध्यान और योग का विशेष महत्व होता है। पूजा, व्रत और गुरु दक्षिणा के अनुष्ठान भी इस दिन विशेष रूप से किए जाते हैं। एक और महत्वपूर्ण श्लोक है जो गुरु की महिमा को दर्शाता है:

ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः पूजामूलं गुरोः पदम्।

मन्त्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोः कृपा॥

Meaning: The root of meditation is the Guru's form; the root of worship is the Guru's feet; the root of mantra is the Guru's word; the root of liberation is the Guru's grace.

गुरु पूर्णिमा का सामाजिक प्रभाव भी व्यापक है। यह दिन शिक्षा के महत्व को मान्यता देता है और गुरु के प्रति श्रद्धा और सम्मान का भाव जागृत करता है। समाज में गुरु का महत्वपूर्ण योगदान प्रकट होता है, जहाँ वे

शिक्षा और ज्ञान के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। गुरु पूर्णिमा हमें सिखाती है कि ज्ञान की प्राप्ति के लिए गुरु का सम्मान और आदर कितना महत्वपूर्ण है। इस प्रकार, गुरु पूर्णिमा का पर्व हमारे जीवन में गुरु की महत्ता को समझाने और उनके प्रति हमारी श्रद्धा को प्रकट करने का एक महत्वपूर्ण अवसर है।